आरती दुर्गा जी की

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी, तेरा पार न पाया । टेक ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तेरी भेंट चढ़ाया । सुन-१ ।
सुवा चोली तेरे अंग विराजे, केसर तिलक लगाया । सुन-२ ।
नंगे पग तेरे द्वारे राजा आया, सोने का छत्र चढ़ाया । सुन-३ ।
ऊंचे-ऊंचे पर्वत वन्यो दिवाला, नीचे शहर बसाया । सुन-४ ।
सतयुग द्वापर त्रेता मध्ये, कलयुग राज सवाया । सुन-५ ।
धूपदीप नैवेद्य आरती, मोहन भोग लगाया । सुन-६ ।
ध्यानुभगत मैया तेरा गुण गाया, मन वांछित फल पाया । सुन-७ ।

विवरण

हिमालय पर्वत पर निवास करने वाली देवी ! आपका कोई पार नहीं पाया है । पान, सुपारी, ध्वजा एवं नारियल लेकर हम आपकी पूजा करने आये हैं ।

आप के सुन्दर अंग में लाल चुनरी एवं चोली शोभित हो रही है तथा आपके माथे पर कुंकुम के चन्दन का लेप लगा हुआ है, जिससे आपका सौंदर्य और भी निखर गया है । नंगे पाँव चलकर राजा अकबर तुम्हारे दरबार में आया था, एवं सोने का छत्र चढ़ाया था । राजा अकबर ने ऊँचे-ऊँचे पर्वत के समान दीवारें बनवाईं तथा उसके नीचे एक शहर बसाया ।

सत्युग, द्वापर, त्रेता, मध्ये एवं कलियुग को सदा से आप ही सेवती चली आईं हैं। धूप, दीप, नैवेद्य आदि से हम आपकी आरती उतारते हैं तथा अनेक प्रकार के मिष्ठान से हम आपका भोग लगाते हैं । ध्यानूभगत कह रहें हैं कि हे मइया ! हम तेरे गुण की गाथा को गा कर अपने मन के अनुसार फल पाकर ही आपके दरबार से जाते हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.

all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.